हिन्दी मेरी संस्कृति

आकाश दीप
निरीक्षक / हिंदी अनुवादक
भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल

अखण्ड है, प्रचण्ड है,
इसमें सबकी उमंग है,
हिंदी हिन्दोस्तान में,
अभिन्न एक अंग है,

सुर है ताल है,
शब्दों का भण्डार है
जिसने भी अपनाया है
उसे मिलता सशक्त आधार है।

राज है, राष्ट्र है,
यह वतन का प्रतीक है
हिंदी जिसकी संस्कृति
बस उसी की तो जीत है।

गीत है, गज़ल है,
गीता का भी ज्ञान है,
सम्बोधन जो करे हिंदी में
वह व्यक्ति ही महान है।

खेत हैं, खलियान हैं,
मेहनतकस किसान हैं
हिंदी के इस देश में,
हिंदी मेरी पहचान है।

गंगा है, जमुना है,
और झरनों का शोर है,
मोर–पपीहा हिंदी बोले
यहाँ हर कोई सरावोर है।

गुरु है, सन्त है,
पतझड़ और बसंत है
एक राष्ट्रभाषा की
बोलियां अनन्त है।

सर्वोच्च है, संपूर्ण है,
संकीर्ण मगर कभी नहीं
यह समां है, हाथ बढ़ाने का
अभी नहीं तो कभी नहीं।

रहा अब जमाना नहीं,
तीर और तलवार का
गोलियों की आवाज़ में गूंजे
हिंदी में गान देश प्यार का।

'आकाश' है, दीप है
नित जीवन में नई सीप है
जीतना है तो अपनालो
मेरी हिन्दी तो सबकी मीत है।

कशिश है, ये एहसास है
सबका इसमें विश्वास है
समझने – समझाने का
माध्यम सबसे ये खास है।

हिन्दोस्तां मेरा वतन है
हिन्दी से मेरी शान है
दिल में ये बसती रहेगी
मेरी जाँ भी इसपे कुर्बान है।

पंचतंत्र तथा प्रबन्धन क्षमताएं

मेजर जनरल ए.के. शोरी,
चीफ पोस्टमास्टर जनरल, हि.प्र. डाक सर्किल, शिमला

प्राचीन भारतीय राजनैतिक दर्शन का आधार धर्म है। जिसका तात्पर्य है– काम करने का सही ढंग अथवा न्याय करना। एक सुदृढ़ राजनैतिक, आर्थिक, न्यायिक तथा सामाजिक प्रणाली के लिए प्राचीन ग्रन्थ रीढ़ की हड्डी की भांति हैं जिनकी नींव सुशासन के सिद्धान्त हैं। सुशासन आधुनिक युग का लोकप्रिय पारिभाषिक शब्द है। 'सुशासन' पर बात करने से पहले प्राचीनकाल के सिद्धान्तों को समझना आवश्यक है। कला, संस्कृति, साहित्य, संगीत, चित्रकला तथा ऐसी विभिन्न कलात्मक गतिविधियों का उत्थान तभी सम्भव है जब लोगों के पास समय हो और ऐसा तभी सम्भव है जब शान्ति हो, कानून एवं व्यवस्था की समस्या न हो तथा प्रशासन ऐसी गतिविधियों को प्रोत्साहित करे और ऐसा तभी सम्भव है जब प्रशासन सुशासन अथवा नीतिशास्त्र के सिद्धान्तों से चलें तथा परिणामस्वरूप लोग धनी एवं समृद्ध हो।

आज हम कानूनी नियम, संवैधानिक प्रावधान एवं विधान, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के मध्य शक्तियों का विभाजन, कर्तव्य–अधिकार की बात करते हैं तथा राजनीति–वैज्ञानिक जैसे हैरॉल्ड लास्कि, जे एस मिल, प्लूटो, अरस्तु तथा भारतीय मूल से चाणक्य का सन्दर्भ लेते हैं। परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि उन्हें राजनैतिक, सामाजिक तथा दार्शनिक विचार भारी संख्या में विद्यमान भारतीय ग्रन्थों से प्राप्त हुए जिनमें 'पंचतन्त्र' प्रमुख है।

पंचतन्त्र तथा हितोपदेश–दोनों की ही रचना विष्णु शर्मा ने तीसरी सदी बी. सी. के लगभग की। पंचतन्त्र को नीतिशास्त्र के क्षेत्र में श्रेष्ठ कृति के रूप में देखा जाता है। नीति का अर्थ जीवन में नीतिसंगत (बुद्धिमतापूर्ण) आचार कहा जा सकता है तथा शास्त्र का अर्थ तकनीकी अथवा

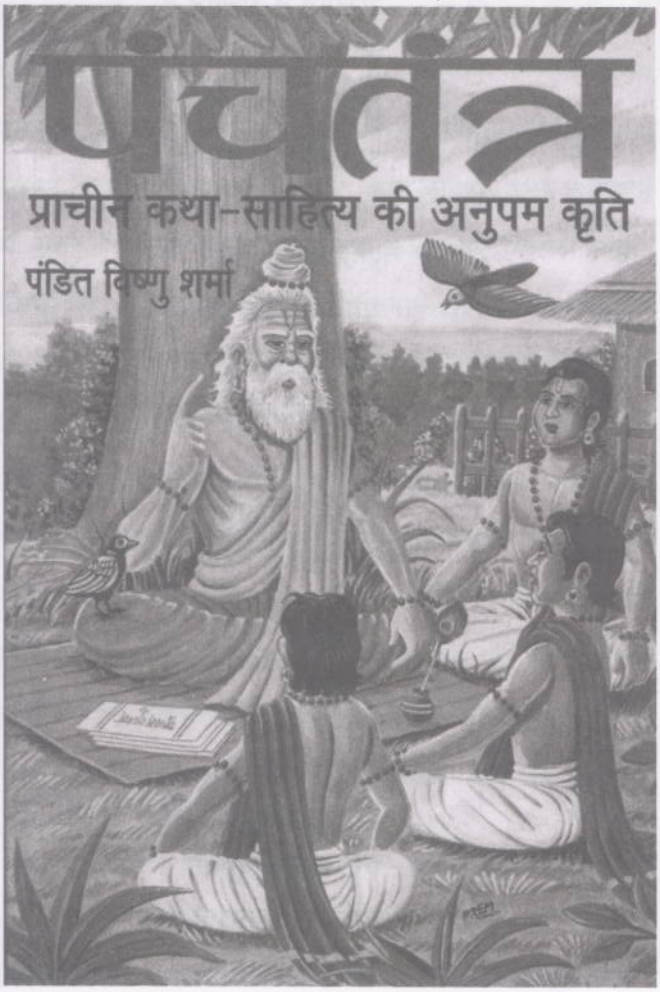

वैज्ञानिक ग्रन्थ है। अतः पंचतन्त्र को राजनीति विज्ञान अथवा मानवीय आचरण का ग्रन्थ कहा जा सकता है। इसे जनजीवन का सदाचार कहना अधिक उपयुक्त रहेगा।

अन्य कहानी में पिरोयी गई पंचतंत्र की कहानियों के संग्रह में उच्च कोटि का ज्ञान है। यद्यपि मुख्यतः कहानियां बच्चों के लिए तथा एक सामान्य बुद्धि वाले व्यक्ति के लिए हैं जिसमें पशुओं को पात्र के रूप में दिखा कर कहानी कही गई है, तथापि इन कहानियों में आधुनिक परिवेश के साथ–साथ जीवन में सदाचार से संबंधित आधारभूत

सिद्धान्त हैं जिनमें प्रबन्धन के ऐसे सिद्धान्तों का ताना–बाना है जिन्हें हर व्यक्ति अपने व्यक्तिगत सामाजिक तथा प्रशासनिक जीवन में प्रयोग कर सकता है तथा विस्तृत रूप में शासक एवं प्रशासक भी इनकी सहायता ले सकते हैं।

यह कहानियाँ जो धर्म एवं अर्थशास्त्र से प्रेरित हैं, इनमें उच्च शिक्षा एवं नैतिक सिद्धान्तों का समावेश है तथा लगातार उठते रहने वाले प्रश्नों का समाधान है कि मनुष्य जीवन में परमानन्द कैसे प्राप्त करे तथा आनन्द की सर्वोच्च स्थिति पाने के लिए नीति किस प्रकार सहायक हो सकती है ताकि मानव की शक्तियों का सम्पूर्ण विकास हो, उसे ऐसा जीवन प्राप्त हो जिसमें संरक्षण, समृद्धि, निर्णय लेने की क्षमता, मित्रता तथा सद्ज्ञान का मिश्रण हो। पंचतंत्र की कहानियाँ वास्तव में सभी पहलुओं के बारे में हैं जिनमें प्रशासन व्यावहारिक सिद्धान्त, मिलजुल कर कार्य करना, वित्तीय प्रबन्धन, प्रशासन तथा व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता, अर्थात व्यक्तिगत, सामाजिक तथा जनजीवन सभी के प्रति दृष्टिकोण इसमें समाहित है।

कुछ दशक पहले, कहानी सुना कर बच्चों को शिक्षा देने की परम्परा सामान्य रूप से प्रचलित थी जब कि आधुनिक तकनीक के आगमन से मनुष्यों का आपस में संबंध संकुचित हो गया है तथा बच्चे, बड़ों से दूर हो गये हैं। सोते समय कहानी सुनना दैनिक जीवन का अटूट हिस्सा था। बच्चे सांयकाल की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते, समय पर अपना सारा कार्य तथा पाठशाला में शिक्षक द्वारा दिया गृहकार्य करते (अक्सर यह एक शर्त होती थी) ताकि कहानी का समय न छूट जाए। इसका आकर्षण इतना था कि बच्चे कहानी छूट जाने के भय से हर वह कार्य करने के लिए तैयार रहते थे जिसे वे अन्यथा न करते। वे अपने दादा–दादी, नाना–नानी (प्रत्येक घर में वयोवृद्ध ही अक्सर कहानी सुनाते थे) से एक के बाद एक कहानी सुनने की जिद्द करते और इस तरह कहानी सुनते–सुनते सो जाते। अन्यथा यूं कहें कि कहानियां उनके लिए सर्वोत्तम नींद की दवा थी।

वास्तव में कहानियां कुछ और नहीं, अपितु ज्ञान का एक अंश, जीवन जीने की कला तथा उच्च नैतिक मूल्यों का वर्णन था जिसमें नीतिपूर्ण जीवन जीने की कला सिखायी जाती थी। कल्पित कथा के मिश्रण से बच्चों को सदाचार एवं सद्व्यवहार सिखाया जाता था। बहुत सी कहानियां सभी धर्म, जाति, सम्प्रदाय (छोटे से स्थानीय परिवर्तन के साथ) में एक समान थी जिनमें वैश्विक सत्य तथा नीति के आधारभूत सिद्धान्त वर्णित रहते थे। कार्यपूर्ति के लिए प्रत्येक साधन को नीतिसंगत ठहराने की नीति को न मानते हुए आरम्भ से ही बच्चों के ऊर्वर मस्तिष्क में नैतिक मूल्यों की शिक्षा की नींव डाली जाती थी। कहानियां पूर्णतः कल्पित ही नहीं होती थी, उनमें ऐतिहासिक घटनाएं भी राष्ट्रीय एवं देशभक्त पात्रों के इर्द–गिर्द बुनी होती थी ताकि अगली पीढ़ी के लिए तय दिशा–निर्देश स्पष्ट हो जाएं। बच्चों में यह सद्गुण बचपन से ही उत्पन्न हो जाते थे, साथ ही बड़ों के प्रति प्रेम, आदर तथा गहन स्नेह भी रहता था।

यह सब कहां खो गया है ? बच्चे स्वयं को बड़ों से अधिक बुद्धिमान एवं ज्ञानवान समझने लगे हैं क्योंकि वे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को सुगमता से प्रयोग कर सकते हैं। बड़ों का स्थान इलेक्ट्रॉनिक गैजेट ने ले लिया है, मनुष्य के स्थान पर मशीन है तथा परिणाम स्वरूप संबंध भी मशीनी ही हो गये हैं। संबंधियों में भावनात्मक संबंधों की जगह दूर बैठे मशीनी मित्र ने ले ली है जोकि इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से करीब है। निकटतम संबंधियों की अपेक्षा अनजान मित्र अधिक विश्वसनीय हो गया है।

निश्चित रूप से लोग कहते हैं कि नैतिक मूल्य आज गिरगये हैं, बड़ों के लिए सम्मान नहीं है, युवा पीढ़ी में

सहनशीलता की कमी है, अहंकार ने स्व को ढक दिया है, रिश्तों का आधार प्रेम एवं स्नेह न होकर स्वार्थ हो गया है, हमें यह समझ लेना चाहिए कि आज के युग की सामाजिक रूग्णता का मुख्य कारण नैतिक शिक्षा का अभाव है। यदि बच्चा अपना बचपन परिचारिका के साथ अथवा शिशुगृह में बिताता है तो उसे नैतिक शिक्षा कौन देगा और क्यों देगा ? प्रारम्भिक शिक्षा उस अनजान व्यक्ति के ज्ञान तथा बौद्धिकता पर आधारित होगी जिसका अपना स्तर संदिग्ध है। तो एक बच्चे का मानसिक, नैतिक तथा भावनात्मक विकास कैसे होगा ? ध्यान रखें कि यह आरम्भ में अपनाये गये मूल्य ही संस्था के व्यवहार को तथा आचार–व्यवहार को प्रभावित करेंगे जोकि राजनैतिक समाज में भी दिखाई देते है।

जो हम कहानियों से सीखते हैं उससे हमारी प्रबन्धन क्षमताएं समृद्ध होती हैं ताकि हम बदलते परिवेश में अच्छे से अच्छा निष्पादन कर सकें। तुरन्त सफलता पाने के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग पूर्णतया निषिद्ध माना जाता है। दूसरे शब्दों में, यह अपने पर नियन्त्रण था जिसका केन्द्र नैतिक मूल्य होते थे, क्योंकि सद्नीति का अर्थ सुशासन तथा सकारात्मकता ही है।

आज शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों के मध्य की दूरी ने पंचतंत्र के अनुसरण को और भी सार्थक बना दिया है। उस जमाने में स्वयं को तथा दूसरो को समझने की कला भी सिखायी जाती थी। जहां तक पंचतन्त्र की कहानियों का विषय है, संक्षिप्त वर्णन के अतिरिक्त लेखक का परिचय राजकुमारों को शेष कार्य का वर्णन करते हुए कराया गया है, इसके पांच भाग हैं। प्रत्येक भाग में मुख्य कथा है जो अपने भीतर कई खुली कहानियां समेटे हुए है जिसमें एक पात्र दूसरे पात्र को कहानी सुना रहा है। अक्सर इन कहानियों में पुनः खुली कहानियां हैं। कहानियों के साथ–साथ, पात्र भी अपना वक्तव्य स्पष्ट करने के लिए युक्तिपूर्ण कविता कहते है।

पांच किताबों का विवरण इस प्रकार है–

– मित्रभेद–मित्रों का वियोग / खोना / धोखा

– मित्र लाभ अथवा मित्र सम्प्राप्ति–मित्रों की प्राप्ति

– काकोलूकीयम–युद्ध एवं शान्ति

– लब्धप्रनसम् – प्राप्त लाभ की हानि

– अपरीक्षितकारकम् – III – देखभाल कर किया कार्य / जल्दबाजी अथवा शीघ्रता से किया कार्य / ऐसे कार्य जिनकी कोशिश नहीं की गयी।

आधुनिक प्रबन्धन में दक्ष व्यक्ति कोशिश करते हैं कि उत्तम रणनीति अपनाते हुए एक अच्छी टीम की सहायता से संस्थान के कार्य–कलाप को बदल कर, अधिकाधिक धन अर्जित करके संस्थान को आगे बढ़ायें जिसका उचित प्रबन्धन आवश्यक है। परन्तु नैतिकता के आधारभूत मूल्यों को अनदेखा कर ऐसा करना सम्भव नहीं है। यह पंचतन्त्र का सार है।

जिन लोगों में लज्जा का गुण न हो, जो किसी भी गलत कार्य को करने में संकोच नहीं करते और जो लज्जा हीन हों, उनसे कभी भी मित्रता नहीं करनी चाहिए।

– आचार्य चाणक्य

गेहूँ एवं जौ रतुआ रोगों के शोधकार्यों का सारसंग्रह

डॉ. ओम प्रकाश गंगवार, वैज्ञानिक
भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, शिमला

सामान्य परिचय

भारत में गेंहूँ एवं जौ रतुओं पर शोध कार्य सन् 1923 में स्वर्गीय राय बहादुर डा. कर्म चन्द मेहता के द्वारा आरम्भ किया गया था। डा. कर्म चन्द मेहता उस समय आगरा कॉलेज में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्यरत थे। आरम्भ में रतुआ शोधों पर होने वाले खर्चों को लगभग 7 वर्षों तक उन्होंने निजी तौर पर वहन किया।

बाद में इस कार्य के लिए सन् 1930 में शाही (अब भारतीय) कृषि अनुसंधान परिषद, ब्रिटिश सरकार, द्वारा 2,43,776/–रूपये की आर्थिक सहायता दो किश्तों में प्रदान की गई। इस आर्थिक अनुदान से रतुआ शोध कार्यों में और अधिक विस्तार हुआ। रतुआ शोध कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए डा० मेहता ने आगरा के अलावा तीन

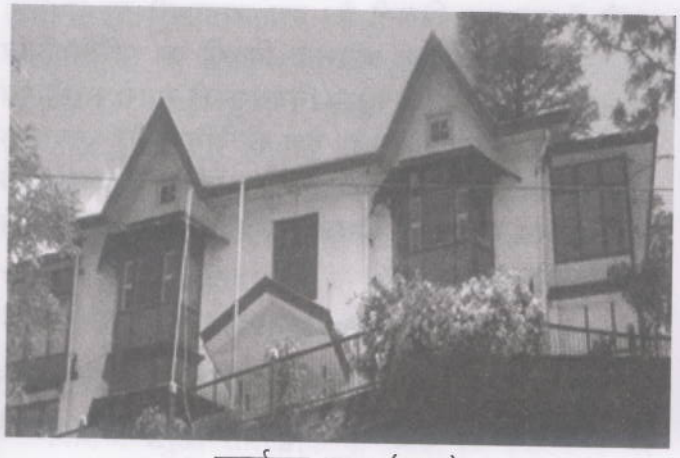

कार्यालय भवन (1875)

अन्य स्थानों – शिमला, अल्मोड़ा एवं मरी (पाकिस्तान) का चयन किया। इन स्थानों में से लावरडेल, शिमला को उन्होंने शोध कार्यों एवं जलवायु की दृष्टि से सबसे उपयुक्त पाया। यहां रतुओं पर शोध एवं उनका रख–रखाव बड़ी आसानी से किया जाता है। इस प्रकार सन् 1930 में यह केन्द्र अस्तित्व में आया। डा० मेहता ने यहां पर किए कार्यों को कई विश्वस्तरीय प्रतिष्ठित जर्नलों/पत्रिकाओं में प्रकाशित किया।

सन् 1950 में उनकी मृत्यु के पश्चात, यह केन्द्र, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के अधीन हो गया। तद्पश्चात जब गेहूँ अनुसंधान निदेशालय एक स्वतंत्र संस्था के रूप में बना तब यह केन्द्र निदेशालय का हिस्सा बना। इस समय गेहूँ अनुसंधान निदेशालय को भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान के रूप में जाना जाता है।

स्थान एवं जलवायु

यह केन्द्र, शिमला शहर के पूर्व में लावरडेल नामक स्थान पर 3.6 एकड़ भूमि पर स्थित है। यहां की जलवायु ठंडी तथा औसत तापमान सर्दियों में 0–16 और गर्मियों में 15–28 डि०से० रहता है। यह समुद्रतल से लगभग 2000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है तथा यहां औसतन वर्षा 1425 मि०मी० होती है।

शीशगृहों का एक दृश्य

संसाधन

वर्तमान में बुनियादी सुविधाओं के अंतर्गत इस केन्द्र में 12 ग्लास/पौलीहाउस उपलब्ध है जिनमें 4 शीशगृह वातानुकूलित है। लगभग 2 एकड़ भूमि पर पादप प्रजनन एवं बीज बहुलीकरण कार्य किए जाते हैं। इसके अलावा एक छोटी सी प्रयोगशाला आणविक कार्य हेतु समर्पित है। इसके अतिरिक्त अल्ट्रा डीप फ्रिजर (–80 डि०से०) एवं तरल नाईट्रोजन (–196 डि०से०) दीर्घकालीन रतुआ सामग्री

भंडारण के लिए उपलब्ध है। इस केन्द्र पर गेहूँ एवं जौ रतुआ नमूनों के विश्लेषण, जर्मप्लाज्म का रतुआ के उग्र प्रभेदों के विरूद्व मूल्यांकन, रतुआ प्रतिरोधी जीन्स के विशिष्टीकरण हेतु सम्पूर्ण सुविधायें उपलब्ध हैं। यह केन्द्र गेहूँ के तीनों रतुओं के सभी प्रभेदों का परि रक्षक है तथा इनके संरोप को पूरे देश के विभिन्न शोध केन्द्रों को आपूर्ति भी करता है। इस तरह का कार्य करने वाला यह भारतवर्ष का एक मात्र केन्द्र है।

वर्तमान में मुख्य शोध कार्य गेहूँ एवं जौ रतुओं पर किया जाता है। इनमें गेंहूँ का तना/काला रतुआ (पक्सीनिया ग्रेमिनिस ट्रिटिसाई), पत्ती/भूरा रतुआ (पक्सीनिया ट्रिटिसिना), धारीधार/पीला रतुआ (पक्सीनिया स्ट्राईफार्मिस) एवं जौ का तना/काला रतुआ (पक्सीनिया ग्रेमिनिस ट्रिटिसाई हॉर्डि), पत्ती/भूरा रतुआ (पक्सीनिया हॉर्डि), धारीधार/पीला रतुआ (पक्सीनिया स्ट्राईफार्मिस हॉर्डि) प्रमुख हैं।

अधिदेश (Mandate)

1. भारत में गेहूँ एवं जौ रतुओं में परिवर्तनशीलता की जांच तथा नए प्रभेद की पहचान करना।
2. रतुआ प्रतिरोधी स्रोतों की पहचान करने हेतु गेहूँ एवं जौ की अग्रिम किस्मों का सभी रतुओं के उग्र प्रभेदों के विरूद्व मूल्यांकन करना।
3. रतुआ प्रतिरोधी जीन्स को गेहूँ अग्रिम लाईनों में जीन मिलान तकनीक द्वारा अभिधारणा करना।
4. रतुआ प्रतिरोधी जेनेटिक स्टॉक (आनुवंशिक वंश) विकसित करना, रतुआ प्रतिरोध आनुवंशिकी व्यस्क पादप प्रतिरोध एवं गेहूँ के रतुआ प्रभेदों की परिवर्तिता का मार्कर द्वारा अध्ययन करना।
5. सभी रतुआ प्रभेदों का जीवित ग्रहणक्षम पौधों पर तथा तरल नाईट्रोजन में (–196 डि०से०) दीर्घकालीन रख–रखाव।
6. भारत में गेहूँ एवं जौ रतुओं के नियंत्रण के लिए रणनीति बनाना।
7. संपूर्ण देश के विभिन्न शोध केन्द्रों या वैज्ञानिकों के लिए रतुआ प्रतिरोध एवं आनुवंशिक अध्ययन हेतु रतुआ के उग्र प्रभेदों के संरोप/रस्ट इनॉकुलम की पूर्ति करना।
8. गेहूँ रोग निरीक्षण नर्सरी (डब्ल्यू.डी.एम.एन) तथा सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ) गेहूँ रोग निरीक्षण नर्सरी का संचालन एवं समायोजन करना।

प्रमुख उपलब्धियां

गेहूँ एवं जौ रतुओं में परिवर्तनशीलता

भारत में गेहूँ एवं जौ रतुओं में परिवर्तिता की निगरानी सन् 1930 से की जा रही है। अभी तक तीनों रतुओं में 127 से अधिक प्रभेदों की पहचान आरम्भिक अवस्था में की जा चुकी है। प्रत्येक वर्ष 1500 से अधिक गेहूँ एवं जौ रतुआ नमूनों का विश्लेषण किया जाता है, जिससे देश के विभिन्न क्षेत्रों में रतुआ प्रभेदों की प्रबलता तथा नये प्रभेद की पहचान करने में सहायता मिलती है। इस जानकारी का उपयोग गेहूँ एवं जौ की रतुआ प्रतिरोधी किस्मों का परिनियोजन करने में होता है जो कि रतुआ नियंत्रण की सबसे सस्ती एवं पर्यावरण हितैषी रणनीति है। देश के विभिन्न गेहूँ उत्पादक पारिस्थितिक क्षेत्रों में विविध रतुआ प्रतिरोधी किस्मों के परिनियोजन के कारण पिछले 35 वर्षों में कोई भी प्रमुख रतुआ प्रकोप नहीं हुआ है।

रतुआ प्रतिरोध के संभावित स्रोत

देश के विभिन्न प्रजनकों द्वारा विकसित की गई 1000 से अधिक अग्रिम लाईनों का मूल्यांकन रतुआ के 80 से अधिक उग्र प्रभेदों के विरुद्ध किया जाता है। इस आधार पर अब तक 500 से अधिक रतुआ प्रतिरोधी लाइनों को पहचाना जा चुका है।

रतुआ प्रतिरोध जीन्स का निरूपण

इस क्षेत्रीय केन्द्र में उपलब्ध प्रमुख गेहूँ लाईनों में रतुआ प्रतिरोध आनुवंशिकी की जानकारी विकसित कर ली गई है। भारतीय गेहूँ में निम्न रतुआ प्रतिरोध जीन्स हैं –

भूरा रतुआ : एलआर 1,3,9,10,13,14ए,17,18,19,22,22ए, 22बी,23,24, 26,28,34,46 एवं 49

काला रतुआ : एसआर 2,5,6,7ए,7बी, 8ए,8बी,9बी, 9ई,11, 12,13,17, 21,24,25,30 एवं 31

पीला रतुआ : वाईआर 2,ए,9,18

वर्तमान में एलआर 24,25,29, 32,39, 45,47 एसआर 26,27, 31,32, 33,35, 39,40,43 एवं वाईआर5,10,11, 12,13, 14,15,16, एसपी,एसके, क्रमशः भूरा, काला एवं पीला रतुआ प्रतिरोधी जीन्स है।

रतुआ प्रतिरोधी आनुवंशिक स्टॉक एवं व्यस्क पादप प्रतिरोध

इस केन्द्र से अब तक कुल 26 रतुआ प्रतिरोधी आनुवंशिक स्टॉक विकसित किये गये हैं जिन्हें भाकृअप– राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली के साथ पंजीकृत किये जा चुके है। हाल ही में 150 से अधिक लाइनों को पहचाना जा चुका है जो कि एक या अधिक रतुआ प्रभेदों के प्रति व्यस्क पादप प्रतिरोध दर्शाती है।

आणविक अध्ययन

हाल ही में भूरा रतुआ के 49 प्रभेदों में विभिन्नता का अध्ययन एसएसआर मार्कर द्वारा डी०एन०ए० स्तर पर किया गया जिससे इन प्रभेदों की अनेक समूहों में विभाजित करने में सहायता प्राप्त हुई है। मार्कर सहाय्यित चुनाव (मास) तकनीक द्वारा गेहूँ लाईनों में अभिधारणित भूरा रतुआ प्रतिरोधी जीन एलआर 9, 19, 24, 26 एवं 28 की पुष्टि करने में मद्द मिली है। इसके अतिरिक्त जीन वाईआर 10 जोकि भारत में गेहूँ के पीला रतुआ के प्रति प्रतिरोध प्रदान करता है, को रूपांकित किया गया।

गेहूँ एवं जौ प्रभेदों का राष्ट्रीय संग्रह

विभिन्न रतुआ रोगजनक के प्रभेदों को इस केन्द्र पर सन् 1930 से संभाला जा रहा है। वर्तमान में सभी रतुआ रोगजनक के प्रभेदों (127) को ग्रहणक्षम जीवित पादप पोषक पर एवं तरल नाईट्रोजन में अनुरक्षित किया जा रहा है।

रतुआ प्रभेदों के नाभिक संरोप; इनॉकुलम तथा बीजों की आपूर्ति

देश के विभिन्न शोध केन्द्रों पर आनुवंशिक एवं गेहूँ रतुआ के विरुद्ध परीक्षण करने के लिए प्रत्येक वर्ष रतुआ प्रभेदों का इनॉकुलम तथा गेहूँ के बीजों की आपूर्ति की जाती है।

गेहूँ रोग निरीक्षण नर्सरी का आयोजन

गेहूँ रोग निरीक्षण नर्सरी (डब्ल्यू डी एम एन) तथा सार्क गेहूँ रोग निरीक्षण नर्सरी को भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, भूटान और नेपाल में 75 से अधिक स्थानों पर योजन किया जाता है जिसका संयोजन एवं परिचालन इस केन्द्र द्वारा किया जाता है।

टीम उत्कृष्टता एवं बाह्य वित्तपोशित परियोजनायें

यह केन्द्र 1999 से 2005 तक राष्ट्रीय कृषि प्रौघोगिकी परियोजना (एन.ए.टी.पी.) के तहत टीम– उत्कृष्टता में रहा हैं। इस केन्द्र पर पांच बाह्य वित्तपोषित परियोजनाओं को पूर्ण कर लिया गया है तथा अभी तीन डीबीटी एवं एक आईसीएआर परियोजना चल रही है। यह केन्द्र भाकृअनुप, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र और पादप प्रजनन संस्थान आस्ट्रेलिया के साथ सहयोगात्मक प्रयोग कार्य कर रहा है। इस केन्द्र से न्यूज़लेटर/समाचार पत्रिका (छःमाही) एवं वार्षिक प्रतिवेदन भी प्रकाशित किया जाता है।

प्रान्तीय ईर्ष्या एवं द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती।

– सुभाष चंद्र बोस

पीलिया रोग - लक्षण, उपचार तथा रोकथाम

डॉ. मीनू अग्रवाल, आवासी चिकित्सा अधिकारी
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

सुमित नए साल की छुटियाँ मनाने अपनी पत्नी के साथ दिल्ली से शिमला आया था। 4–5 दिन दोनों ने मॉल तथा शिमला के आस पास के पर्यटन स्थलों की खूब सैर की तथा हर तरह के खाने का लुत्फ उठाया। छुट्टियाँ कैसे बीत गयीं पता ही नहीं चला, वापिस दिल्ली जाने का समय हो गया था। कार ड्राईव करते समय रास्ते में सुमित को थोड़ी हरारत महसूस होने लगी, आधे रास्ते उसकी पत्नी नेहा ने ड्राईव किया। दिल्ली पहुंचते ही सुमित को बुखार हो गया व बदन दर्द करने लगा। पहले सोचा सफर की थकान है, लेकिन फिर आँखों में भी पीलापन लगने लगा तो डॉक्टर को दिखाया, पता चला उसे पीलिया हो गया है।

पीलिया रोग एक विशेष प्रकार के वायरस और किसी कारणवश शरीर में पित कि मात्रा बढ़ जाने से होता है। इसमें रोगी को पीला पेशाब आता है और उसके नाखून, त्वचा एवं आँखों का सफेद भाग पीला पड़ जाता है, बेहद कमजोरी, कब्जियत, जी मिचलाना, सिरदर्द, भूख न लगना आदि परेशानियाँ भी रहने लगती हैं।

प्रमुख कारण

विषाणु जनित वायरल हेपेटाइटिस एक प्रकार के वायरस से होने वाला रोग है जो रोग से पीड़ित रोगी के मल के संपर्क में आये हुए दूषित जल, कच्ची सब्जियों आदि से फैलता है। कुछ लोग इससे ग्रसित नहीं होते है उनके मल से इसके वायरस दूसरों तक पहुँच जाते हैं, पेट से यह लीवर में और वहां से सारे शरीर में फैल जाता है, रोगी को लगाई गई सूई का अन्य स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में बिना उबाले प्रयोग करने से व रोगी का खून अन्य स्वस्थ व्यक्ति में चढ़ाने से भी यह रोग फैलता है। इसके अतिरिक्त बहुत दिनों तक मलेरिया रहना, पित की नली में पथरी, ज्यादा शराब पीना आदि कारणों से भी इस रोग की उत्पति होती है।

लक्षण

वायरस के शरीर में प्रवेश करने के लगभग दो सप्ताह से छः सप्ताह में इस रोग के लक्षण नजर आने लगतें हैं। लक्षणों के प्रारंभ होने से एक सप्ताह पहले ही रोगी के मल से वायरस निकलने लगतें हैं। रोगी को भूख लगना बंद हो जाता है, उसका जी मिचलाता है और कभी–कभी उसे उल्टी भी हो जाती है और कब्जियत रहती है। दाहिनी पसलियों के नीचे भारीपन या दर्द, सिरदर्द, शरीर थका–थका सा लगने लगता है। रोगग्रस्त व्यक्ति को बुखार आने लगता है और मूत्र गहरे रंग का आता है। साथ ही मल का रंग फीका हो जाता है और त्वचा एवं आँखों का रंग पीला हो जाता है।

पीलिया रोगियों की जाँच करने पर उनका लीवर कुछ बड़ा हो सकता है और रक्त में बिलीरुबिन का स्तर बढ़ जाता है। पीलिया स्वयं कोई रोग विशेष नहीं हैं बल्कि कई रोगों में पाया जाने वाला एक लक्षण है।

उपचार

पीलिया के उपचार के पूर्व रोग के कारण का पता लगाया जाता है। इसके लिए रक्त की जाँच, पाखाने की जाँच, तथा लीवर की कार्यक्षमता की जाँच करते हैं। इससे यह पता लगता है कि यह रक्त में लाल कणों के अधिक नष्ट होने से है या लीवर में खराबी है या फिर पितमार्ग में अवरोध होने से है।

पीलिया की चिकित्सा में इसे उत्पन करने वाले कारणों का निर्मूलन किया जाता है। मिर्च, मसाला, तेल, घी, प्रोटीन कम खाने की सलाह दी जाती है। लीवर अपना कार्य ठीक से सम्पादित करे इसके लिए दवांए दी जाती हैं।

यदि किसी व्यक्ति का उपरोक्त कोई लक्षण नजर आएं

तो उसे शीघ्र ही डॉक्टर के पास जा कर परामर्श लेना चाहिए। आराम करना चाहिए और घूमना फिरना नहीं चाहिए। लगातार जांच कराते रहना चाहिए। डॉक्टर की सलाह से फलों का रस, चावल, दलिया, खिचड़ी, उबले आलू, शकरकंदी, ग्लूकोस, गुड़, चीकू, पपीता, मूली आदि कार्बोहायड्रेट वाले पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

रोकथाम एवं बचाव

पीलिया रोग से बचने के लिए कुछ साधारण बातों का ध्यान रखना जरूरी है– खाना बनाने, परोसने, खाने से पहले व बाद में और शौच जाने के बाद में हाथ साबुन से अच्छी तरह धोना चाहिये। भोजन को ढ़ककर रखना चाहिए, ताकि खाद्य सामग्री को मक्खियों व धूल से बचाया जा सके। ताजा व शुद्ध गर्म भोजन करें। दूध व पानी अच्छी तरह उबाल कर पीयें। कूड़ा– करकट सही स्थान पर डालें। गंदे, सड़े–गले व कटे हुए फल नहीं खाएं। धूल पड़ी या मक्खियाँ बैठी मिठाइयों का सेवन नहीं करें। स्वच्छ शौचालयों का प्रयोग करें। डॉक्टर की सलाह से हेपेटाइटिस ए तथा हेपेटाइटिस बी कि वैक्सीन लगवा लेनी चाहिए।

क्षणिकाएं

अनुपम सक्सेना
भारत सरकार मुद्रणालय, शिमला

मैं तुम्हें एक अनोखे पुस्तकालय में बदल देना चाहता हूँ ..
मैं तुम्हारे बारे में कुछ अलग शब्दों में लिखना चाहता हूँ
तुम्हारे अकेले के लिए ईजाद करना चाहता हूँ एक भाषा
जिसमें समा सके तुम्हारी देह
और जिससे मापा जा सके मेरा प्यार
मैं शब्दकोशों से बाहर की यात्रायें करना चाहता हूँ
मैं चाहता हूँ एक ऐसा मुख
जिससे निकलें शब्द ठीक वैसे ही
जैसे समुद्र से निकलती हैं जलपरियाँ
मैं तुम्हें एक अनोखे पुस्तकालय में बदल देना चाहता हूँ
जिसमें मुझे चाहिए :
बारिश की लय ... नीले–सफेद बादलों की धूल
स्लेटी रेत की उदासी भी ..

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है -कमलापति त्रिपाठी

संत रविदास

सुखविन्दर सिंह
अवर श्रेणी लिपिक

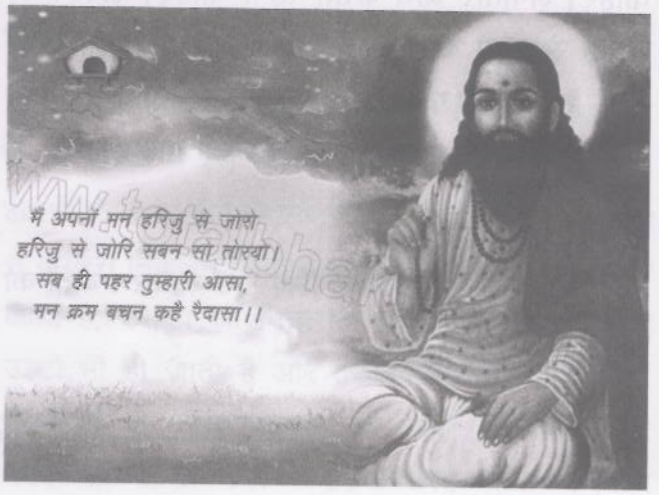

रैदास के नाम से विख्यात संत रविदास का जन्म सन 1377 अनुमानित में बनारस में हुआ। रैदास कबीर के समकालीन थे। रैदास की ख्याति से प्रभावित होकर सिंकदर लोदी ने इन्हें दिल्ली आने का निमंत्रण भेजा था। मध्ययुगीन साधकों में रैदास का विशिष्ट स्थान है। कबीर की तरह रैदास भी संत कोटि के प्रमुख कवियों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। कबीर ने संतन में रविदास कहकर इन्हें मान्यता दी है। मूर्ति पूजा जैसे दिखावों में रैदास का बिल्कुल भी विश्वास न था वह व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं और आपसी भाईचारे को ही सच्चा धर्म मानते थे। रैदास ने अपनी काव्य–रचनाओं में सरल, व्यावहारिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू–फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है। रैदास को उपमा और रूपक अलंकार विशेष प्रिय रहे हैं। सीधे–सादे पदों में संत कवि ने हृदय के भाव बड़ी सफाई से प्रकट किए हैं। इनका आत्म–निवेदन दैन्य भाव और सहज भक्ति पाठक के हृदय को उद्वेलित करते हैं। रैदास के चालीस पद सिखों के पवित्र धर्म–ग्रंथ श्री गुरूग्रंथ साहिब में भी सम्मिलित हैं।

संत रविदास जी द्वारा रचित आरती उनकी काव्य–कला का उत्कृष्ट उदाहरण है–

नाम तेरो आरती मजन मुरारे।
हरि के नाम बिन झूठे सगल पसारे।।
नाम तेरो आसनो नाम तेरो उरसा।
नाम तेरा केसरो ले छिटकारे।।
नाम तेरा अंभुला नाम तेरो उरसा।
नाम तेरा दीवा नाम तेरो बाती।।
नाम तेरो तेल ले माहि पसारे।
नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे।
नाम तेरो तागा नाम फूल माला
भार अठाहरा सगल जूठारे।
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नाम तेरा तुही चवर ढोलारे।
दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे
कहै रविदास नाम तेरो आरती सति नाम है हरि भोग तुहारे।।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समित, शिमला के सदस्य कार्यालयों की सूची

1	महानिदेशक, राष्ट्रीय लेखापरीक्षा एंव लेखा एकादमी यारोज, शिमला - 171004 फोनः 2803178/2652724	2	सहायक निदेशक, गीत व नाटक प्रभाग सी0जी0ओ0 काम्पलैक्स, लौंगवुड, शिमला - 171 001 फोनः2651454
3	महालेखाकार (लेखा व हकदारी) गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला-171003 फोनः2824935	4	क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, रेलवे बोर्ड बिल्डिंग, शिमला- 171 004 फोनः 2652436
5	प्रधान महालेखाकार (प्रशासन) गार्टन कैसल बिल्डिंग शिमला-171 003 फोनः2652994	6	महानिदेशक, श्रम ब्यूरो क्लैरेमोंट शिमला-171 004 फोनः 2804084
7	चीफ पोस्ट मास्टर जनरल हिमाचल प्रदेश सर्कल शिमला-171 009 फोनः2629001	8	निदेशक, केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, बैम्लोई, शिमला। फोनः2624640/2627269
9	उप-निदेशक, सहायक आसूचना ब्यूरो गृह मंत्रालय, डारमर्ज कैथू शिमला-171003	10	सरकारी परीक्षक प्रश्नास्पद प्रलेख न्यायालयिक विज्ञान निदेशालय, रेलवे बोर्ड भवन, शिमला-171003 फोनः2811173
11	निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, अम्बेदकर चौक,शिमला-171004 फोनः2811450/2813448	12	युवा समन्वयक, नेहरू युवा केन्द्र भारत सरकार, डोगरा लॉज, शिमला- 171 004 फोनः2657178
13	केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी, शिमला -171 004 फोनः	14	निदेशक भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास, चौड़ा मैदान, शिमला 171 004 फोनः2831376/2832195
15	निदेशक, जनगणना परिचालन केन्द्रीय सरकारी कार्यालय परिसर हिमाद्रि ब्लॉक-बी, प्रथम तल लौंगवुड, शिमला- 171 004 फोनः 265148/265149	16	क्षेत्रीय निदेशक, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, दीनदयाल उपाध्याय चिकित्सालय परिसर शिमला-171 001 फोनः2651978/2653649
17	मुख्य अभियन्ता, दीपक परियोजना मिन्टोकोर्ट, शिमला-171 005 फोनः2830991	18	निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, कोनिफर कैम्पस, पंथाघाटी, शिमला-171009 फोनः2626779
19	उप-महानिरीक्षक, भारत तिब्बत सीमा पुलिस, तारादेवी, शिमला-171 010 फोनः2832886/230600	20	क्षेत्रीय निदेशक, भारत वन सर्वेक्षण उत्तरी अंचल, केन्द्रीय कार्यालय परिसर लौंगवुड, शिमला-171001 फोनः2658285

21	पुलिस, अधीक्षक केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो रेलवे बोर्ड बिल्डिंग, शिमला–171003 फोनः2654110	22	उपमहानिदेशक, राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण, बौसवेल, शिमला– 171005 फोनः2633266/2633442
23	सहायक सम्पदा प्रबन्धक, सम्पदा कार्यालय, ग्रैंड होटल शिमला–171 001 फोनः2658121	24	अधीक्षक पुरातत्वविद् भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,केन्द्रीय परिसर, एस0 ब्लाक, क0 नं0 309–10, लौंगवुड, शिमला–171 001 फोनः2651170/2650584
25	प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय शिमला–171 004 फोनः2806225	26	क्षेत्रीय प्रदर्शनी अधिकारी, डी0ए0वी0पी0– 27 रेलवे बोर्ड बिल्डिंग, शिमला–171 003 फोनः2652636
27	प्रमुख वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, भा0 कृ0 अनु0 संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, अमरतारा काटेज, शिमला–171 004 फोनः2655305	28	अधीक्षण अभियन्ता, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, शिमला–171004 फोनः2657531/2652476
29	सहायक सूचना अधिकारी, पत्र सूचना कार्यालय, हिमलोक परिसर, शिवालिक खण्ड, तीसरी मंजिल, वैटसलै, लौंगवुड, शिमला–171 001 फोनः2657462/2801668	30	राष्ट्रीय सूचना विज्ञान अधिकारी, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, छठी मंजिल, आर्मसडेल, हि0 प्र0 सचिवालय, छोटा शिमला–171002 फोनः2652216/2624045
31	रक्षा पेंशन संवितरण अधिकारी डी0पी0डी0ओ0, आरट्रैक परिसर शिमला–171 001 फोनः2807714	32	प्रभारी अधिकारी, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो, क्षेत्रीय संस्थान फागली, शिमला–171004 फोनः2835459
33	परियोजना मूल्यांकन अधिकारी परियोजना मूल्यांकन कार्यालय, हिमाद्रि खण्ड, तीसरी मंजिल, सी0जी0ओ0 काम्पलैक्स, लौंगवुड, शिमला–171001 फोनः2657334	34	निदेशक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विष्वविद्यालय खलीनी, शिमला–171002 फोनः2624611/612
35	छावनी अधिशसी अधिकारी छावनी परिषद् जतोग, शिमला–17100 फोनः28375988	36	प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय जाखू, शिमला–171 001 फोनः2653202
37	सहायक निदेशक (विपणन) राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, 11 तल, निगम बिहार एच0पी0एम0सी0 काम्पलैक्स, शिमला–171002 फोनः2622908	38	प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय जतोग, शिमला–171008 2837301
39	क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, ब्लाक नं0 34 एस0डी0ए0 काम्प्लैक्स, शिमला–171009 फोनः2624620/2627684	40	प्राचार्य, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय, छोटा शिमला–171002 फोनः2620677/2624838
41	उप नियंत्रक, दीपक परियोजना द्वारा 56, सेना डाकघर शिमला। फोनः2830990	42	कार्यालय सहायक लेखा अधिकारी स्टेशन हैडक्वाटर, शिमला–171 003 फोनः2653237

43	मुख्यालय सेना प्रशिक्षण कमान शिमला-171 003 फोनः2804590	44	स्थानीय लेखा परीक्षा अधिकारी, स्टेशन हैडक्वाटर, शिमला-171 003 फोनः2653237
45	डिप्टी कमांडेट, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, गृह मंत्रालय, शिमला एयरपोर्ट, शिमला -171011 फोनः2736284	46	अध्यक्ष, गेहूं अनुसंधान निदेशालय भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद क्षेत्रीय केन्द्र, फलावरडेल, शिमला-171002 फोनः2621978
47	उपमहालेखाकार (स्थानीय निकाय) गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला-171003 फोनः2657629	48	पासपोर्ट अधिकारी, पासपोर्ट कार्यालय, रेलवे बोर्ड भवन, शिमला-171003 फोनः2650070/2658648
49	सहायक आयुक्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क/सेवाकर मंडल नजदीक बी.सी.पी.एम.,एल.ए. क्रॉसिंग बालूगंज, शिमला-171005 फोनः2622644/2830112	50	नियंत्रक (संचार लेखा) ब्लॉक-18,एस0डी0ए0 कॉम्पलैक्स, कसुम्पटी, शिमला-171009 फोनः2620600/2627414
51	निदेशक मौसम विभाग, सेन्टर शिमला, बिबरा हाउस,क्लिफ एण्ड इस्टेट, शिमला-171001 फोनः	52	आयकर अपर आयुक्त, शिमला रेंज, शिमला, रेलवे बोर्ड भवन, शिमला-171003 फोनः2653203
53	मुख्य आयकर आयुक्त, रेलवे बोर्ड भवन, दि माल, शिमला-171003 फोनः2803232	54	प्रधान आयकर आयुक्त, रेलवे बोर्ड भवन, दी माल, शिमला-171003 फोनः2650758
55	श्रम प्रवर्तन अधिकारी, का0 श्रम प्रवर्तन, केन्द्रीय कार्यालय परिसर, लौंगवुड, शिमला-171001 फोनः2651632	56	उपायुक्त, विशेष ब्यूरो, ऑक लॉज एनैक्सी, नजदीक विधानसभा, शिमला-171004 फोनः
57	एकीकृत वित्तीय सलाहकार आद्रैक शिमला 171003 फोनः2656799	58	उप महा निरीक्षक चिकित्सा प्रशिक्षण केंद्र एस.एस.बी. फरहिल, शिमला-171004 फोनः280440/2652329
59	प्राचार्य होटल प्रबंधन संस्थान कुफरी शिमला-171012 फोनः	60	प्रभारी अधिकारी केंद्रीय सहकारी विकास निगम , के.के. हाउस, अपर कैथू, शिमला-171003 फोनः2658735/2657689
61	सेनानायक, सशस्त्र सीमा बल, दूरसंचार प्रशिक्षण केंद्र कसुम्पटी शिमला-171009	62	प्राचार्य, जवाहर नवोदय विद्यालय, ठियोग,शिमला।
63	निदेशक केंद्रीय जल आयोग बी- 10 कसुम्पटी, शिमला-171009 फोनः2624036	64	क्षेत्रीय लेखा अधिकारी सी0बी0डी0टी0,ब्लॉक न. 22 आयकर भवन, कसुम्पटी, शिमला-171009 फोनः2626507/2629508
65	स्टेशन अधीक्षक, उत्तर रेलवे, रेलवे स्टेशन शिमला-171004	66	निदेशक शिमला हवाई अड्डा भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण जुब्बड़ हट्टी, शिमला - 171011.

पिछले अंक के बारे में पाठकों के विचार

1. श्री एस.एस कटैक, उपनिदेशक भारतीय वन सर्वेक्षण

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'यात्रा' का 19वां अंक हस्तगत हुआ। इसमें प्रकाशित सामग्री सभी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं। एक एक लेख का उल्लेख करना संभव नहीं होगा तथापि प्रकाशित सामग्री समग्र रूप से राष्ट्रीय, सामाजिक और सामयिक संदर्भों से समृद्ध है। इस संग्रहणीय पत्रिका से संपादक मंडल द्वारा किए गए सराहनीय कार्य की झलक मिलती है। आशा करता हूँ कि 'यात्रा' का सफर इसी प्रकार सफलतापूर्वक चलता रहेगा, साथ ही यात्रा का यह निखार उत्तरोत्तर बढ़ता रहेगा। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को मेरी ओर से हार्दिक बधाई व शुभ कामनाएं।

2. प्रेम चंद, सचिव, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान

संस्थान को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'यात्रा' का 20वां अंक प्राप्त हुआ। नराकास, शिमला के सदस्य कार्यालय हिंदी के प्रचार–प्रसार के प्रति किस प्रकार उत्साहित और समर्पित हैं, पत्रिका में निहित विभिन्न आयोजनों व गतिविधियों से स्पष्ट पता चलता है। सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक हैं और उनमें लेखकों के मनोभावों व समाज, राष्ट्र तथा अपने देश की भाषा के प्रति उनके दृष्टिकोण का पता चलता है। पत्रिका का कवर पेज़ बहुत आर्कषक है जिसमें प्रदेश की सांस्कृतिक झलक मिलती है।

पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को बधाई तथा आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

3. अनुपम सक्सेना, पी. प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, शिमला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वार्षिक पत्रिका 'यात्रा' का 20वां अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक, पठनीय तथा ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकारों तथा सम्पादक मंडल को इस श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं। पत्रिका का मुखपृष्ठ आकर्षक एवं मनोहारी है तथा मुद्रण उच्च स्तर का है।

पत्रिका की निरन्तर प्रगति एवम् उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला की गतिविधियां